

1.

Interpretation of Weather Maps

परिचय (Introduction):

किसी निश्चित स्थान पर किसी विशेष समय पर प्रेक्षित वायुमण्डलीय दशाओं को उस स्थान का मौसम कहते हैं। जैसे किसी स्थान का प्रातः कालीन अवका संज्ञा कालीन मौसम। यह अस्थायी अवका अल्प कालिक होता है।

इसके विपरीत किसी बड़े भू-भाग के औसत मौसम को जलवायु कहते हैं। किसी क्षेत्र की जलवायु निश्चित करके के लिए उस क्षेत्र में लम्बे समय में प्रेक्षित मौसम की औसत दशाएँ ज्ञात की जाती हैं। ये परिवर्तन दीर्घकालीन होता है।

मौसम मानचित्र में मौसम से सम्बन्धित आधिकारिक घटनाओं का वर्णन होता है। मौसम मानचित्रों में सममान रेखाओं, संकेत क्षरों व प्रतीकों के द्वारा किसी क्षेत्र की अल्पकालीन वायुमण्डलीय दशाओं, जैसे - वायुमण्डलीय दाब,

पवन की दिशा व वेग, वर्षण की मात्रा, प्रकार व वितरण, आकाश व समुद्र की दशाएँ तथा ताप-मान के प्रसामान्य से विचलन आदि को प्रदर्शित किया जाता है।

— मौसम मानचित्र का महत्व

(Importance of Weather Maps):—

- (i) मौसम मानचित्रों का हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।
- (ii) दैनिक मौसम मानचित्रों के अध्ययन व विश्लेषण से अगामी दिनों के मौसम का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
- (iii) मौसम पूर्वानुमान से समय से पूर्व आवश्यक सावधानी बरती जा सकती है।
- (iv) इसके विपरित मौसम के संभावित परिणाम से भी बचा जा सकता है।
- (v) कृषि, मौसम-चालन तथा विमानन

कार्यों में आगामी मौसम की पूर्व जानकारी अत्यधिक लाभप्रद होती है।

(vi) मौसम पूर्वानुमान से वर्षा सम्बंधित दशा वाद रूप सुरवा से भी बचा जा सकता है। समग्र रहते ही इसके निदान हेतु आवश्यक कदम उठाये जा सकते हैं।

(vii) समुद्र तट के किनारे स्थित आवासीय वास्तुओं को मौसम पूर्वानुमान के सहारे ही समुद्री विक्षोभों से बचाया जा सकता है।

(viii) विश्व की सभी घटनाओं का संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आवश्यक ही मौसम से संबंधित होता है।

इसके अलावा ही मौसम जीवन के हर पहलु पर अपना प्रभाव डालती है। अतः मौसम मानचित्रों का अत्यधिक महत्व है।

हवा के शीतल होने की उपरीक्त विधियों के अनुसार वर्षा मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

By : Dr. Md. Jamshed Alam